DATE 2.12.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33 B, CHD

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी ,
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 12 'हृदय परिवर्तन')

पुस्तक - नवतरंग - 4

प्यारे बच्चो, सुप्रभात!

बच्चो! आज हम पाठ-12 'हृदय परिवर्तन' पढ़ेंगे जो कि कक्षा चौथी की पुस्तक नवतरंग के पृष्ठ-89 पर दिया गया है। इस पाठ में महान कहे जाने वाले सिकंदर के जीवन से जुड़ी घटना को दर्शाया गया है। इस कहानी के माध्यम से यह बताया गया है कि बहुत सफलता प्राप्त करने पर यदि स्वयं पर अभिमान हो जाए, तो जो सफलता आपने प्राप्त की है, उसकी चमक धूमिल हो(पड़)जाती है। यदि आप दूसरों को हानि पहुँचाकर जीत प्राप्त कर लेते हैं तो असल में वह जीत नहीं होती। निस्वार्थ भाव से दूसरों की मदद करना और संवेदनशील होना ही असली सफलता है।

बच्चो! सिकंदर महान के नाम से जिसे जाना जाता है, उस सिकंदर ने कई युद्ध जीते थे। वह सारे संसार पर विजय प्राप्त करना चाहता था। बहुत-से देशों पर विजय प्राप्त करने के बाद उसने अपने सेनापतियों को भारत की ओर कूच करने का आदेश दिया।

प्राचीनकाल में भारतवर्ष सारे संसार में 'सोने की चिड़िया' के नाम से प्रसिद्ध था। भारत संसार में सबसे अमीर देश माना जाता था।

सिकंदर का आदेश मिलते ही सेनापतियों ने नक्शे देखे और भारत की प्रस्थान किया। विशाल हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों को पार कर देश भारत में प्रवेश किया और सिंधु नदी तक पहुँच गए।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

2.12.24

DATE
PAGE No. 2

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-12 'हृदय परिवर्तन')

वहाँ जाकर उन्होंने अपने खेमे गाड़ दिए।

एक दिन सिकंदर अपने घोड़े पर सवार होकर जंगल की ओर निकल पड़ा। जैसे ही वह आगे बढ़ा, उसे दूर कहीं आग की लपटें दिखाई दीं। वह नज़दीक गया, तो कुछ संत सिंधु नदी के तट पर यज्ञ करते दिखाई दिए। एक पेड़ की ओट में वह चुपचाप खड़ा हो गया।

बच्चो! सरदी का मौसम था। उन संतों ने नाममात्र के कपड़े पहने हुए थे। सिकंदर को लगा कि वे निर्धन हैं इसलिए उनके पास तन ढकने के लिए कपड़े नहीं हैं। उसे उन साधुओं पर दया आ गई और उसने उन नंगे साधुओं के लिए कुछ करने का सोचा।

रात काफ़ी हो चुकी थी। अतः वह वापस अपने खेमे में गया उसने प्रधान सेनापति को फ़ौरन कुछ गरम कपड़ों और कंबलों की व्यवस्था करने का आदेश दिया। गरम कपड़े और कंबलों को घोड़ों पर लदवाकर स्वयं अपने काफ़िले के साथ वहाँ पहुँचा जहाँ यज्ञ की आहुतियों और मंत्रोच्चारण से वायुमंडल गूँज रहा था।

सिकंदर उन संतों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपने घोड़े को उनके निकट लेकर गया लेकिन किसी संत ने उसकी ओर नहीं देखा। सिकंदर ने स्वयं को उपेक्षित महसूस किया। तब उसने एक संत को झकझोरकर कहा, "ऐ फकीर! सुनो, मैं सिकंदर महान हूँ।"

संत ने शांत भाव से उसकी ओर देखा और मधुर स्वर में कहा, "कहो नवयुवक, क्या चाहते हो? मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?"

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं तक पढ़ेंगे। इसका शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य :-

सब बच्चे इस पाठ को दो बार उच्च स्वर में पढ़ेंगे। पृष्ठ-92 पर दिए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner